युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 52वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि साप्ताहिक पुण्यतिथि समारोह

18 सितम्बर से 24 सितम्बर 2021

श्रीगोरखनाथ मन्दिर में कथा

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर। कथा। 22 सितंबर 2021। युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 52 वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि के अवसर पर चल रहे श्रीराम एवं श्रीकृष्ण कथा का तात्विक विवेचन विषय पर आज छठें दिन कथा व्यास अनंत श्रीविभूषित जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्य जी महाराज विद्याभास्कर ने व्यास पीठ से कहा कि श्री राम और श्री कृष्ण के अवतार सभी अवतारों सभी अवतारों में श्रेष्ठ है। इन दोनों का नाम लेने से सभी 24 अवतारों का स्मरण हो जाता है। दिन में भी चंद्रमा दिखता है और सूर्य के प्रकाश के आगे चंद्रमा का प्रकाश ना के बराबर होता है परंतु रात्रि में चंद्रमा का ही महत्व होता है । सूर्य और चंद्र दोनों समान महत्व है। राम सूर्य हैं तो कृष्ण चंद्र ।राम दिन का प्रतिनिधित्व करते हैं तो कृष्ण रात का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए दिन रात दोनों को मिलाकर दिवस पूर्ण होता है । इसीलिए श्री राम और श्री कृष्ण का नाम लेने से सब कार्य पूर्ण हो जाते हैं। रामचरितमानस में तुलसीदासजी ने लिखा है कलयुग केवल नाम अधारा। कलयुग में केवल भगवान के नाम का स्मरण करने मात्र ही से इस भवसागर से मानव पार हो जाते हैं। इसी प्रकार कलिसंतरण नामक उपनिषद जिसमें कलयुग में भवसागर पार होने का वर्णन किया गया है। इस उपनिषद का अंतिम मंत्र है हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। इसलिए राम नाम ही सर्वोपरि है कहते हुए उन्होंने कइला राम के भजनिया भजन गाया पूरा सदन भक्ति भाव में झूम उठा।

कथाव्यास ने कहा कि जब भी हम माया से जुड़ते हैं तो हम हरि से अपना नाता तोड़ लेते हैं, उन्होंने कहा कि राम में लगन मत तोड़ो उनका भजन निरंतर करते रहो। आदमी तो गर्भ में ही शपथ लेता है राम के भजन का परन्तु बाहर आते ही भूल जाता है। माता-पिता भाई, बेटा, मित्र कोई भी साथ नहीं जाता है, अकेले

ही जाना होता है। केवल प्रभु का नाम साथ जाता है, केवल उनका भजन और अपना कर्म साथ जाता है। इसलिए दुनिया में से आशा छोड़कर हरी से नाता जोड़ना है, उन्ही का चरण पकड़ना चाहिए, उन्हीं की शरण में जाना चाहिए। केवल वही हमारा उद्धार कर सकते हैं। अपने भक्तों का सबसे अधिक ख्याल रखने वाले भगवान ही होते हैं जो भगवान की सेवा करने वाला होता है या भगवान के राज्य में समर्पित भाव से रहने वाला होता है वही भगवान का वह सबसे बड़ा भक्त होता है। प्रशासक वही अच्छा होता है जो अच्छे काम पर प्रशंसा करें और कभी चूक हो गई तो उसको भी क्षमा करके अपना लेता है। भगवान सबसे बड़े शासक है। भगवान कभी अहंकार नहीं दिखाते, वह ग्वाल बालों के साथ खेल रहे थे तक उनके मित्र मनसखा सामने रखे लड्डू को खा जाता है, मुंह में डाल लेता है, सोचता है भगवान कृष्ण तो नंद जी के लड़के हैं वह मुंह में से निकालेंगे नहीं, जूठा खाएंगे नहीं मैं अकेले खा जाऊंगा पर भगवान तो भगवान हैं वह मनसुका को हंसा करके उसके मुंह से लड्डू निकाल कर खा जाते हैं क्योंकि मनसखा भगवान कृष्ण को बड़ा प्रिय है। यह देखकर ब्रह्माजी को आश्चर्य होता है कि भगवान हो करके भी एक व्यक्ति का झूठा खा रहे हैं। ब्रह्मा जी को अहंकार होता है तो भगवान उनके भी अहंकार का शमन करते। उन्हें आभास दिलाते हैं कि भगवान तो भाव का भूखा है।

एक बार जब ब्रह्मा जी की परीक्षा लेने के उद्देश्य से गायों और ग्वाल बालों को चुरा लेते हैं तो भगवान श्री कृष्ण गायों , बछड़ो और ग्वाल बालों का रूप धारण करके लीला करते । ब्रह्म जी सोचते हैं कि कृष्ण जी को डाट पड़ रही होगी ,चलो देखते हैं परंतु ब्रज में आकर देखते हैं कि यहां जिनको जिनको उन्होंने चुराया है वे सभी उपस्थित है। ब्रह्मा जी को आश्चर्य होता है तब भगवान उनको सभी के रूप में अपने परमात्मा स्वरुप का दर्शन कराते हैं। यह सब कुछ देख कर ब्रह्मा जी का मान मर्दन हो जाता है और भगवान से क्षमा मांगते हुए उनकी स्तुति करते हैं। दर्शन तो दे ना एक बार अय मुरलिया वाले भजन गाकर कथा व्यास ने श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। सारी दुनिया ही पाठशाला है संपूर्ण जीवन ही पढ़ाई है। हम सभी को अपने आप को छात्र के रूप में ही समझते हुए जीवन भर अध्ययन करते रहना चाहिए। हर किसी से जहां भी अच्छी सीख मिले हमें सीखना चाहिए। जो जीवन पर्यन्त सीखता है वही अपने जीवन में सफल होता है। हर व्यक्ति से हमे सीखना

चाहे क्योंकि हर व्यक्ति कुछ विशेष ज्ञान रखता है । गांव के किसान अनेक प्रकार की औषधियों के ज्ञाता होते हैं क्योंकि वह प्रकृति के अत्यंत करीब रहते हैं।

कथा व्यास ने कहा कि जो मनुष्य कृष्ण रूपी रसायन का पान करता है उसे अन्य किसी औषधि की आवश्यकता नहीं होती उसके संपूर्ण रोग व्याधियों का नाश हो जाता है। रसायन उसे कहते हैं जो रोग और बुढ़ापे को दूर रखता है। भगवान की भक्ति का रसायन पी लेने पर इस मृत्युलोक के जन्म मरण से मुक्त होकर जीव हमेशा हमेशा के लिए दुखों से छुटकारा पा जाता है। बाल्मीकि रामायण का प्रत्येक पात्र नीतियों की ही बात करता है चाहे वह रावण हो, चाहे विभीषण हो, चाहे सुपर्णखा हो, हर व्यक्ति नीति की ही बात करता है। वेदों की नीतियों का उल्लेख करता है परंतु अपने अहंकार और अपने आदत के कारण रावण का पराभव होता है।

कथा का समापन आरती एवं प्रसाद के साथ हुआ। संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह ने किया। आज की कथा में योगी कमलनाथ जी, रोहतक हरियाणा के सांसद तथा बाबा मस्तनाथ मंदिर स्थल बोहर के महंत योगी बालकनाथ जी, आज की कथा में यजमान पुष्पदंत जैन, अवधेश सिंह, अजय कुमार सिंह, महंत रविन्द्रदास ,अरुण कुमार अग्रवाल , महेश पोद्दार, विकास जालान, कनकहरि , रिंकी जैन प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।